नगांव-असम। राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया के नगांव जिले में आगमन पर उन्हें क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व ब्लेसिंग कार्ड भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) के 58वें पुण्य स्मृति दिवस को आध्यात्मिक ज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। इस मौके पर जेल के हेड वार्डन लोकेश शर्मा, राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. लता बहन तथा उपस्थित सभी भाई-बहनों ने मातेश्वरी जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

लखनऊ-त्रिपाठी नगर(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर में कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के पश्चात् लखनऊ वापस लौटे कृषि विभाग उत्तर प्रदेश के अधिकारियों के लिए आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में डॉ. पंकज त्रिपाठी,निदेशक,राज्य कृषि प्रबंध संस्थान उ.प्र., डॉ. जितेन्द्र कुमार तोमर,प्रबंध निदेशक,बीज विकास निगम उ.प्र., प्रो. डॉ. पी.के. कनौजिया, डॉ. विजय कुमार सिंह, फार्म मैनेजर डॉ. जे.पी. गंगवार, सत्येन्द्र कुमार, ओ.पी. मिश्रा,जिला कृषि अधिकारी,अयोध्या तथा कृषि विभाग उत्तर प्रदेश के अन्य अधिकारियों को ईश्वरीय सौगात तथा ज्ञानसरोवर सम्मेलन में भाग लेने का प्रमाण पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु. इंद्रा दीदी तथा ब्र.कु. नंदिनी बहन।

मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अंतर्गत मथुरा रिफाइनरी एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में रिफाइनरी नगर में कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित दो दिवसीय समर कैम्प में मथुरा रिफाइनरी ऑफिसर क्लब के सेक्रेट्री रविंद्र यादव, मथुरा रिफाइनरी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष मुकेश शर्मा, एग्जीक्यूटिव मेम्बर संदीप खरबंदा, अविनाश मिश्रा, ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कृष्णा दीदी, इंपल्स माइंड एकेडमी से डॉ. दीपा गर्ग, डॉ. रश्मि गोयल, बेसिक शिक्षा विभाग की शिखा बहन, आयोजन के संयोजक एवं इंडियन ऑयल में सीनियर मैनेजर बी.के. आलोक, प्रतिभागी बच्चे एवं उनके अभिभावक शामिल रहे। इस दौरान बच्चों को आसन-प्राणायाम के साथ विभिन्न कार्यशालाएं एवं एक्टिविटीज़ कराई गई तथा प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

ज़रा सोचें...

स्वयं ही स्वयं का निरीक्षण कर जीवन में आगे बढ़ते जायें...

जिस लक्ष्य से हम बाबा के बने हैं, वो लक्ष्य रोज़ याद रखना है। ताकि इधर-उधर न हो जायें। जिस निश्चय और नशे से ज्ञान में चले हैं, जिस उमंग-उत्साह से हम योगी-तपस्वी बने हैं, उसमें ज़रा भी ढीलापन नहीं आना चाहिए। चलते-चलते थोड़ा ढीलापन आ जाता है ना, इधर-उधर अटेंशन जाने लगता है, अलबेलापन आने लगता है। तो बाबा कहते हैं– 'दुनिया में तो बहुत झंझट हैं, अनुभवी आप सब हैं ही।' घर-गृहस्थी की कितनी बातें हैं, नौकरी-धन्धे की भी कितनी बातें हैं। जीवन की मूल बातों पर विचार करते हैं कि अंत में तो आत्मा को क्या साथ लेकर जाना है? बेशक जीवन में, यज्ञ में, सेवा में, समाज में, धन, साधन, सुविधायें सबकुछ चाहिए। और उसी के लिए आप मेहनत करते हैं, कमाते हैं। वो तो आवश्यक है। पर दिन-रात केवल उसी में लगे रहेंगे तो हम आत्म-कल्याण, आत्म-उन्नति के लिए और कुछ नहीं कर सकेंगे।

बीच-बीच में कुछ समय डिटैच होने से, न्यारे होने से, हम शान्ति से सोच सकते हैं कि जो कुछ दिन-रात हम कर रहे हैं, उसमें से क्या ज़रूरी है? कितना आवश्यक है? बहुत ट्रैफिक जाम हो जाता है तो कुछ भी हौचपौच, संघर्ष होने की सम्भावना हो जाती है। पर ट्रैफिक कंट्रोल 'रेड सिग्नल' हो जाता है तो 'स्टॉप' हो जाते हैं। फिर चैनलाइज़ कर देते हैं तो परिस्थिति ठीक रहती है। तो जीवन में पैदा हुए तब से तो हम कहते हैं ना – 'हर क्षण, जन्म से लेकर मृत्यु की ओर चल रहे हैं।' तो बीच में कुछ रूक कर देखने की, ऑब्ज़र्व करने की, सोचने की आवश्यकता है कि – 'कहाँ जा रहे हैं, क्या कर रहे हैं, क्या आवश्यक है, किसमें फायदा है?' यह हरेक को सोचने की आवश्यकता है। जब तक हम डिटैच होकर अपने आपको नहीं देखते तब तक अपने आप में क्या ठीक करना है वो पता नहीं चलता है।

एक बात मैं आप सभी को बताना चाहती हूँ, एक कम्पनी के मैनेजर्स का ग्रुप यहाँ आया था, मैनेजमेंट ट्रेनिंग के लिए। उसमें एक मैनेजर जो खुद भी बुद्धिवान था। दो-तीन क्लास करने के बाद उसने कहा कि मेरे पास भी ऐसे बहुत अच्छे-अच्छे विचार हैं जैसे आप सब बता रहे हैं, लेकिन मेरी कम्प्लेन है कि मुझे कोई सुनता नहीं है। तो हम सभी ने उनको कहा कि– 'भाई, नेक्स्ट क्लास में आप हमें भी नहीं सुनिये और बाहर कैम्पस में, साइलेंस में वॉक करिए, गार्डन में जाइये, और स्व-निरीक्षण करिये, अपने आपको आब्ज़र्व करिये, देखिये, कि क्यों लोग आपको सुनते नहीं हैं? शाम को क्लास में वो आये, बड़े खुश नज़र आ रहे थे। हम सबने पूछा कि आपको अपने प्रॉब्लम का सॉल्यूशन मिला? उन्होंने कहा कि– हाँ, जो मैंने एक घंटा साइलेंस में वॉक किया, अपने आपको देखा, तो मुझे समझ में आया कि लोग मुझे क्यों नहीं सुनते हैं? क्योंकि मैं ही किसी को नहीं सुनता हूँ। उनको ये इगो था, इसलिए वो किसी की सुनते नहीं थे। तो जब हम किसी की नहीं सुनेंगे, तो हमारी कौन सुनेगा?

हम सभी ज्ञान मार्ग में चल रहे हैं, रोज़ क्लास-योग कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, बाबा के मददगार साथी बच्चे हैं, पर हम अपने आपको देखें कि किस लक्ष्य से हम बाबा के बने थे, और उसी लक्ष्य की दिशा में हम चल रहे हैं? ज्ञान-योग करके हम क्या बनना चाहते हैं? बाप समान पतित से पावन बनना और बनाना चाहते हैं ना! पावन बनने का लक्ष्य है? आत्मा की स्थिति हिलती कब है, जब कोई-न-कोई माया का आकर्षण आता है, तो अपसेट होते हैं। अवस्था बिगड़ गयी, माया का तूफान आ गया, संगदोष लग गया, है ना! जब हम कोई-न-कोई विकार के प्रभाव में आते हैं, तो अवस्था हमारी डगमग होती है। मूड ऑफ होता है, खुशी गायब होती है, इच्छायें मन में उत्पन्न होती हैं और आकर्षण में आते हैं।

> जीवन में पैदा हुए तब से तो हम कहते हैं ना – 'हर क्षण, जन्म से लेकर मृत्यु की ओर चल रहे हैं।' तो बीच में कुछ रूक कर देखने की, ऑब्ज़र्व करने की, सोचने की आवश्यकता है कि – 'कहाँ जा रहे हैं, क्या कर रहे हैं, क्या आवश्यक है, किसमें फायदा है?'

फिर हम लक्ष्य को याद करते हैं कि लक्ष्य क्या है? हमें क्या चाहिए? तो हमें चाहिए – सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान, शक्ति। परन्तु हमें सत्य चाहिए, शुद्ध चाहिए। बनावटी नहीं चाहिए। वहाँ ही तो रिलेशन टूटते हैं, फिर निराशा आती है कि झूठा प्यार निकला, धोखा किया। तो आत्मा ओरिज़नली सत्य है, शुद्ध है, अविनाशी है। इसलिए आत्मा को जो कुछ चाहिए- वो भी कैसा चाहिए? सत्य चाहिए, शुद्ध चाहिए, अविनाशी चाहिए। टेम्परारी या मतलब से नहीं चाहिए। तो बाबा मिले, सत्य ज्ञान मिला, सही मार्ग मिला, तो हम सबने अपने जीवन को परिवर्तन किया। बाबा से हम सत्य, शुद्ध, सात्विक आनन्द प्राप्त कर रहें हैं। क्योंकि जब तक सही ज्ञान बुद्धि में नहीं, जीवन की परिस्थितियों को भी हम यथार्थ समझ नहीं सकते। बिना ज्ञान आप अचल-अडोल नहीं रह सकते। इसलिए हमें स्वयं ही स्वयं को समझाना है। स्वयं ही स्वयं का निरीक्षण कर जीवन में आगे बढ़ते जाना है।

आगरा-आर्ट गैलरी म्यूज़ियम(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के आर्ट गैलरी ऑफ स्पीरिचुअल लव एंड विज़डम में 'मेंटरशिप प्रोग्राम फॉर करियर काउंसलर्स'-'द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर सीए रोहित रोवाटिया,चेयरमैन,करियर काउंसलिंग ऑफ आईसीएआई, वक्ता गौरव अग्रवाल, वक्ता यश गुप्ता, पदाधिकारी विवेक अग्रवाल, आयुष गोयल, सचिव अजय जैन तथा अन्य सदस्यों सहित ब्र.कु. सूरजमुखी बहन,रूद्रपुर, ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. माला बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. ममता बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कुराली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से जवाहर नवोदय विद्यालय राकोली,कुराली में मास हेल्पर्स को 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

दिल्ली-पीतमपुरा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 15वें 'नवचेतना बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के दौरान प्रतिभागी बच्चों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. इति बहन तथा अन्य।

दिल्ली-वज़ीराबाद। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बच्चों के लिए आयोजित 'समर कैम्प' के दौरान समूह चित्र में प्रतिभागी बच्चे, ब्र.कु. दीपा बहन तथा अन्य।